सऊदी अरब-रियाज़
इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय
रब्वा
1430-2009

islamhouse.com

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा को तिजारत बना लेने का हुक्म

[*हिन्दी*]

शैख़ मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन रहिमहुल्लाह

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

All islamhouse.com rights are open

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

हर प्रकार की प्रशंसा सर्व जगत के पालनहार अल्लाह तआला के लिए योग्य है, तथा अल्लाह की कृपा एंव शांति अवतरित हो अन्तिम संदेष्टा मुहम्मद पर, तथा आप के साथियों, आप की संतान और आप के मानने वालों पर।

हमारे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सराहना, प्रशंसा और आपकी विशेषताओं और खूबियों का उल्लेख करना एक सराहनीय काम है, किन्तु आप की तारीफ में सीमा को पार कर जाना, या उसे तिजारत बना लेना आपत्तिजनक है। इसके विषय में सऊदी अरब के एक महा विद्वान मुहम्मद बिन सालेह बिन उसैमीन रहिमहुल्लाह से एक प्रश्न पूछा गया जिसका उन्हों ने निम्नलिखित जवाब दिया, जो पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा हैं, आशा है कि यह फत्वा उक्त मसअले की बाबत जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा। (अ.र.)

प्रश्न : *नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा को तिजारत बना लेने के बारे में क्या हुक्म है?*

उत्तर :

इसका हुक्म यह है कि यह हराम है, और यह जानना आवश्यक है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा के दो प्रकार हैं :

प्रथम : ऐसी प्रशंसा जिस के आप पात्र हैं और वह गुलू (अतिशयोक्ति) के दरजे तक न पहुँचे, तो ऐसी प्रशंसा में कोई हरज नहीं है, यानी ऐसी तारीफ में कोई हरज की बात नहीं है कि आप के आचरण और तरीक़े से संबंधित सराहनीय विशेषताओं और संपूर्ण गुणों और खूबियों का उल्लेख किया जाए।

दूसरी : रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऐसी तारीफ़ जिस में तारीफ करने वाला उस गुलू तक पहुँच जाए जिस से मना करते हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं फरमाया :

“मेरी प्रशंसा में इस तरह गुलू (अतिशयोक्ति) से काम न लेना, जिस प्रकार ईसाईयों ने इब्ने मर्यम की प्रशंसा में गुलू से काम लिया (यहाँ तक कि उन्हों ने उन्हें अल्लाह

का बेटा बना डाला) मैं तो उसका बन्दा हूँ, अतः मुझे अल्लाह का बन्दा और उसका पैग़म्बर कहो।'' (सहीह बुखारी हदीस नं.: 3445)

अगर कोई नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीफ करते हुए यह कहे कि आप फरयाद करने वालों के फरयाद को पहुँचते हैं, परेशान हाल और मजबूर लोगों की दुआ क़बूल करने वाले हैं, आप दुनिया व आखिरत के मालिक हैं, या आप गैब जानते हैं, तो इस प्रकार की तारीफ करना हराम है। इस तरह की तारीफ से कभी कभार आदमी शिर्क-अक्बर करने के कारण इस्लाम से बाहर निकल जाता है, अतः रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीफ में ऐसी शैली नहीं अपनानी चाहिए जो गुलू तक पहुँच जाए क्योंकि इस से तो आप ने स्वयं हमें रोका है।

अब रहा प्रश्न वैध तारीफ को दुनिया कमाने का माध्यम बनाने का, तो यह भी हराम है क्योंकि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सदव्यवहार, श्रेष्ठ आचार और पवित्र जीवनी पर आधारित ऐसी तारीफ जिसके आप पात्र हैं, ऐसी इबादत है जिसके द्वारा अल्लाह की नज़दीकी प्राप्त की जाती है, और जो इबादत हो उसे दुनिया कमाने का माध्यम बनाना जाईज़ नहीं है, क्योंकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ (١٥) أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾

''जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़ीनत (चमक-दकम) के आकांक्षी हैं, हम उनके कामों का (भरपूर) बदला उन्हें दुनिया ही में दे देते हैं और उस में उन्हें कोई कमी नहीं की जाती। यही वो लोग हैं जिन के लिए आखिरत में जहन्नम की आग के सिवाय और कुछ नहीं, और जो अमल उन्हों ने दुनिया में किया होगा वहाँ सब बेकार है और जो कुछ वह करते रहे, सब नष्ट होने वाला है।'' (सरतुल हूद :15-16)

अनुवादक
(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
atazia75@gmail.com

islamhouse.com

المملكة العربية السعودية – الرياض
المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالربوة
٢٠٠٩م – ١٤٣٠هـ

﴿ حكم اتخاذ مدح النبي صلى الله عليه وسلم تجارة ﴾

« باللغة الهندية »

فضيلة الشيخ محمد بن صالح العثيمين رحمه الله

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

حقوق الطبع والنشر لعموم المسلمين